B. A Part - I
Philosophy Paper - 02

Dr. Ragini Kumari
Associate Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

ईश्वर सम्बन्धी सिद्धान्त के रूप में ईश्वरवाद की व्याख्या

(भाग - IV)

(1) वेद, उपनिषद और गीता — वेद, उपनिषद और गीता में ईश्वर को पुरुष-रूप, विश्व-व्यापी और विश्वातीत कहा गया है, जो कि ईश्वरवाद का आधारभूत सिद्धान्त है। ऐसा कथन सर्वप्रथम ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में मिलता है। मूल तत्व परम-पुरुष है, जिसमें, जो है और जो होगा, सभी समाविष्ट है और वह इतना महान है कि विश्व उसका एक चौथाई अंश है तीन चौथाई अंश विश्व के बाहर है।

श्वेताश्वेतर उपनिषद के अनुसार जो भूत में हो चुका है, वर्तमान में हो रहा है और भविष्य में होनेवाला है, वह सब परमपुरुष परमात्मा में विद्यमान है। गीता ईश्वर को पुरुषोत्तम कहती है और विश्व में व्याप्त होते हुए भी उसे सीमित नहीं घोषित करती है।

गीता अध्याय १ श्लोक - 4

रामानुज — रामानुज के अनुसार ईश्वर ही एकमात्र

परमार्थ सत्ता है। वह एक पुरुषोत्तम, सगुण, अनन्त ज्ञान, सौन्दर्य, करुणा आदि सभी गुणों का भण्डार तथा विश्व की सृष्टि, स्थिति तथा प्रलय सबका कर्ता है। विश्व सत्य है और ईश्वर विश्वव्यापी और विश्वातीत दोनों है। रामानुज विष्णु और लक्ष्मी को सृष्टिकर्ता के रूप में मानते हैं।

निम्बार्क — निम्बार्क भी रामानुज की तरह ईश्वर को पुरुषोत्तम मानते हुए उसे एकमात्र परमार्थ तत्व मानते हैं। किन्तु विष्णु और लक्ष्मी की जगह वे राधा और कृष्ण को मानते हैं। कृष्ण को वे ईश्वर रूप मानते हैं जो अनन्त कल्याणकारी गुणों से युक्त है। ईश्वर को ही वे विश्व का उपादान और निमित्त कारण मानते हैं। इस प्रकार हम पाते हैं कि ईश्वरवाद के सम्बन्ध में पाश्चात्य तथा भारतीय दोनों विचारक अपने-अपने मन्तव्य प्रकट करते हैं।

समीक्षा — किन्तु हम पाते हैं कि समीक्षा के धरातल पर ईश्वरवाद भी खरा सिद्धान्त साबित नहीं होता है क्योंकि इस सिद्धान्त की भी कई दृष्टिकोण से आलोचकों ने आलोचना की है जो निम्न प्रकार है—

(1) सर्वप्रथम आलोचकों का कहना है कि विश्व की जो व्याख्या ईश्वरवादी विचारक देते हैं वे ग्राह्य नहीं है क्योंकि ईश्वर को विश्व का मूल कारण मानते हुए कुछ विचारकों का कहना है कि ईश्वर के लिए विश्व आवश्यक है और कुछ के अनुसार अनावश्यक है। यदि

पर आलोचक दो आपत्ति व्यक्त करते हैं—

(1) यदि ईश्वर को विश्व की आवश्यकता है तो उसे निरपेक्ष या पूर्ण नहीं कहा जा सकता। और (2) यदि विश्व उसके लिए अनावश्यक है तो प्रश्न होता है कि उसकी सृष्टि वह क्यों करता है?

(3) सृष्टि क्यों होती है इसका कोई तर्कपूर्ण उत्तर ईश्वरवाद नहीं देता है।

— To be continued —